## पद १९५

(राग: झिंजोटी - ताल: त्रिताल)

कोणीतरी जा ना हो सये गडे। सांवळिया आणां हो गडे गडे।।ध्रु.।। मोरमुगुट मकराकृति कुंडल मंजुळ वाजवी पोंवा। शंख चक्र पीतांबरधारी मजला वाटे पहावा।।१।। गळां वैजयंती हार सांवळी तनु कस्तुरी तिलक कपाळीं। यमुना तिरीं जो वाजवी वेणू गोपाळांच्या मेळीं।।२।। माणिक प्रभु गोपी मनमोहन गोवर्धन गिरधारी। हा अवतार भक्तजनतारक दुष्ट कंस संहारी।।३।।